

श्रीगुरुमाई के वचनों पर ध्यान

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

अपने समय का सम्मान करना

श्रीगुरुमाई के हमसे यह पूछने के बाद कि हम लोग आजकल क्या कर रहे हैं, विशेषकर १ जनवरी के बाद से क्या कर रहे हैं, उन्होंने विशेष तौर पर इस बारे में पूछा कि उनके नववर्ष-सन्देश से जुड़े हमारे विचार और हमारी योजनाएँ क्या हैं। गुरुमाई जी ने हमसे पूछा कि उनके सन्देश के कौन-से शब्द हमारी चेतना में जगमगा रहे हैं। [जब गुरुमाई जी ने ऐसा कहा तब मेरे मन में सत्संग के शीर्षक का विचार आया और मेरी आँखों के सामने गुरुमाई जी के नववर्ष-सन्देश का एक-एक शब्द चमक उठा, जैसे वह सूर्य के प्रकाश में जगमगा रहा हो।]

गुरुमाई जी ने यह भी पूछा कि क्या हमने इस विषय में सोचा है कि हम उनके सन्देश पर ध्यान कैसे करना चाहते हैं। और उन्होंने हमें निर्देश देते हुए कहा, “सन्देश के बारे में ऐसे समय में सोचो जब तुम्हें सन्देश के बारे में सोचना चाहिए।”

जब से हमें यह निर्देश मिला है, मैं इसके बारे में गहराई से विचार करती रही हूँ। इसका क्या अर्थ है कि मैं सन्देश के बारे में ऐसे समय में सोचूँ जब मुझे उसके बारे में सोचना चाहिए। मुझे यह समझ में आया है कि कुछ करने [जैसे, गुरुमाई जी के नववर्ष-सन्देश का अध्ययन और अभ्यास करने] के लिए समय निर्धारित करना और उस समय का वास्तव में सम्मान करना, इन दोनों में फ़र्क है। यह फ़र्क शायद हमेशा से ही रहा है, क्योंकि किसी काम के लिए समय निर्धारित करना और सचमुच उस समय का सम्मान करना, यह तो मानव की मनमर्जी पर ही निर्भर है, पर मुझे लगता है, यह कहना ठीक होगा कि पिछले कुछ सालों में डिजिटल टेक्नोलॉजी के तेज़ी-से प्रगति करने के कारण यह फ़र्क बढ़ गया है। अपने आपको भटक जाने देना बहुत सरल हो गया है। हम अकसर ही देखते हैं कि लोग दूसरों से बात करते-करते अपना मोबाइल देख रहे होते हैं। हमारी तो मानो आदत-सी बन गई है कि हम एक चीज़ करने बैठते हैं, और पलभर बाद कुछ और करने लगते हैं।

दशकों से सिद्धयोग पथ का अनुसरण कर रहीं, मेरी एक सहयोगी ने मुझे एक बार इस बारे में अपने विचार बताए। वे इस बारे में बहुत दृढ़ थीं कि लोगों ने जिस काम के लिए समय तय किया है, वे उसी काम पर अपना ध्यान केन्द्रित करें। उन्होंने भोजन का उदाहरण दिया। यदि आप भोजन करने बैठे हैं

और आपने अपना भोजन भगवान को अर्पित किया है—जैसा कि सिद्धयोग पथ पर हम करते हैं—तो एक तरह से आपने उस समय को उस पावन कृत्य के लिए अर्पित कर दिया है। और यदि आप भोजन का एक निवाला भी खाए बिना उठ जाते हैं, जैसे कि आप नमक लेने के लिए या अपने फ़ोन पर मेसेज देखने के लिए उठ जाते, तो आपने जो वादा किया है, उसे आप तोड़ रहे हैं। आप अपने समय का सम्मान नहीं कर रहे हैं। फलस्वरूप, आप अपना भी सम्मान नहीं कर रहे।

अपनी बात को समझाने के लिए इन सिद्धयोगी ने एक और उदाहरण दिया। यज्ञ करने के लिए ब्राह्मणगण यदि यज्ञकुण्ड के चारों ओर अपना आसन ग्रहण कर चुके हों तो यह आवश्यक है कि वे पूर्णाहूति तक अपनी एकाग्रता को बनाए रखें। वे यज्ञ के बीच में ही चाय-पानी करना तो शुरू नहीं कर सकते न! ऐसे खण्डित रूप में डाली गई उनकी आहुतियों का क्या लाभ होगा? इसका फल क्या मिलेगा?

